क्या मुस्लिम के अलावा दूसरा नाम गलत है ?

अभी हाल मे कुछ दिनो से कुछ लोग इस बात पर ज़ोर दे रहे है कि अल्लाह तआला ने हमारा नाम सिर्फ मुस्लिम रखा है इस के सिवा और कोई नाम रखे तो ये फिरका वराना नाम होगे और इस बात के लिये कुरआन की इस आयत से दलील ली जाती है :

هُوَ سَمَّىٰكُمُ ٱلۡمُسۡلِمِينَ مِن قَبۡلُ وَفِي هَٰذَا ﴿٧٨﴾

''अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा इस कुरआन मे भी और इससे पहले की शरीयतो मे भी ।'' (सुरह हज 22:78)

इस आयते करीमा पर हर मुसलमान का इमान है किसी को इस से इंकार नहीं क्योकि किसी एक आयत या हदीस मे इस जानिब अदना सा इशारा भी नहीं मिलता कि मिल्लते इस्लामिया के लिये मुस्लेमीन के अलावा दीगर किसी नाम का इस्तेमाल हराम व ममनूअ है या इस से उम्मत मे इन्तेशार पैदा होता है ।

भाइयो हर मुसलमान बखूबी वाकिफ है कि अल्लाह पर इमान न लाने वालो को कुरआन ने काफिर कहा है और अल्लाह के साथ शरीक करने वालो को मुश्रिक कहा है और जो अल्लाह का कलमा पढ़ लेता है उस का भी कोई नाम चाहिये ऐसे कलमा गो को अल्लाह तआला ने मुस्लिम नाम रखने को कहा है । इस हैसियत से हर कलमा गो मुसलमान हुआ । लेकिन ये कहना कि हमारा नाम सिर्फ मुस्लिम है अल्लाह पर कितना बड़ा बोहतान है क्योकि अल्लाह तआला के नेक व सालेह बंदो को किसी एक मखसूस नाम से नही बल्कि कुरआन मे बेशुमार नामो से याद किया गया है । कही उन्हे मोमीन कही त्ययबून, सालेहात, तय्येबात, औलिया अल्लाह, हज़बल्लाह, अब्दुल्लाह, अंसार, मुहाजेरीन, अब्दुल जैसे बे शुमार सिफती नामो से याद किया गया है इस आयत के मद्देनज़र देखा जाये तो फिर सिर्फ मुस्लिम कहने वाले उन आयतो के मुन्किर समझे जायेगे जिस मे मुस्लिम के अलावा दूसरा नाम आया है ।

एक मुसलमान के लिये तो वाजिब है कि वो कुरआन के ज़ेर व ज़बर पर भी इमान रखे । अल्लाह तआला ने और नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लफ्ज़ मुस्लिमीन के अलावा जो दूसरा नाम रखा है उस के दलाईल आगे कुरआन व हदीस से पेश किये जायेगे ।

कुरआन मे सिर्फ लफ्ज़ मुस्लेमीन आया है जमाअत का लफ्ज़ हदीस मे है और जमाअत मुस्लेमीन के अल्फाज़ हदीसो मे कसरत से आये है और वो बिल्कुल सहीह है । इससे मुराद हुकुमत मुस्लेमीन है जिस की तशरीह आगे हदीस की रौशनी मे की जायेगी ।

मुस्लिम व मोमिन मे फर्क

अल्लाह तआला ने हमारा नाम मुस्लिम के अलावा मोमीन भी रखा है और ये बात याद रहे कि हर मुस्लिम मोमिन नहीं हो सकता लेकिन हर मोमीन मुस्लिम होगा । अल्लाह तबारक व तआला का इरशाद है :-

۞ قَالَتِ ٱلْأَعْرَابُ ءَامَنَّا ۖ قُل لَّمْ تُؤْمِنُوا۟ وَلَٰكِن قُولُوٓا۟ أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ ٱلْإِيمَٰنُ فِى قُلُوبِكُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ لَا يَلِتْكُم مِّنْ أَعْمَٰلِكُمْ شَيْـًٔا ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤﴾

''कहा बद्दुओ ने हम ईमान ले आये आप कह दीजिये तुम ईमान नहीं लाये लेकिन तुम कहो कि हम मुसलमान हो गये और तुम्हारे दिलो मे ईमान दाखिल नहीं हुआ, तुम अगर अल्लाह और उसके रसुल की फर्माबरदारी करने लगो तो अल्लाह तुम्हारे अमाल मे से कुछ भी कम नहीं करेगा, बेशक अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है ।'' (सुरह हुजरात 49:14)

हाफिज़ इब्ने हजर रह0 फरमाते है कि हक बात ये है कि दोनो (मुस्लिम व मोमीन) मे आम व खास का फर्क है बस हर मोमीन मुस्लिम है लेकिन हर मुस्लिम का मोमीन होना जरूरी नहीं ।(फतहुल बारी 1/115)

यानि मुस्लिम एक आम लफ्ज़ है जिस मे हर किस्म का मुसलमान शामिल है फासिक, फाजिर, मुनाफिक, बिदअती, शराबी, जुआरी, नमाजी, बे नमाज़ी, सब को मुस्लिम कहते है जब कि मोमीन का लफ्ज़ खास है पक्के मुसलमानो के लिये ।

एक बार रसुले अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम हुनैन का माले गनीमत तकसीम फरमा रहे थे तब आपने मुस्लिम व मोमिन के बारे मे इस तरह इर्शाद फरमाया :-

साद बिन अबी वक्कास रजि0 रिवायत करते है कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चंद लोगो को कुछ माल दिया और हजरत साद बैठे हुये थे । आप ने एक शख्स (जुऐल बिन सुराका) को छोड़ दिया । हांलाकि वह शख्स तमाम लोगो मे मुझे ज्यादा पसंद था । मैने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम आप ने फलां शख्स को कुछ नहीं दिया अल्लाह की कसम मै तो उस को मोमिन समझता हूं । आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया – या मुस्लिम ? फिर थोड़ी देर मै चुप रहा फिर जो हाल मै उस शख्स के बारे मे जानता था उसने दोबारा कहने को मजबूर किया तो मैने फिर कहा – आप ने फलां शख्स को क्यो छोड़ दिया ? अल्लाह की कसम मै तो उसको मोमिन जानता हूं । आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया – या मुस्लिम ? फिर थोड़ी देर मै चुप रहा फिर जो हाल मै उस शख्स के बारे मे जानता था उसने फिर कहने पर मजबूर किया तो मै ने तीसरी बार भी वही कहा और आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी वही फरमाया (यानि तुम उसे मोमिन जानते हो या मुस्लिम) इसके बाद आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ऐ साद मै एक शख्स को कुछ देता हूं हालांकि दूसरे शख्स को उस से अच्छा समझता हूं यह इस खौफ से कि कही अल्लाह उस को औंधा कर के जहन्नम मे न ढकेल दें । (किताबुल ईमान, हदीस नं0 27, सहीह बुखारी, किताबुल मगाज़ी, किताबुल ईल्म)

मोमिन ही जन्नत के हकदार है

अल्लाह तआला ने जन्नत का वादा मोमिन के लिये किया है एक मुस्लिम को मोमिन बनने के बाद जन्नत हासिल होगी क्योकि मोमिन और मुस्लिम का फर्क आप ने पढ़ लिया है मोमिन ही जन्नत मे जायेगें इस की दलील कुरआन मे मौजूद है । अल्लाह तआला का इर्शाद है :-

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَىٰٓ إِلَّا مِثْلَهَا ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَٰلِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُو۟لَٰٓئِكَ يَدْخُلُونَ ٱلْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

''और जिस ने नेकी की है चाहे व मर्द हो या औरत और वो मोमिन हो तो ये लोग जन्नत मे जायेगे और वहां बे शुमार रोज़ी पायेगे ।'' (सुरह मोमिन 40:40)

सुरह फतेह मे अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है :-

لِّيُدْخِلَ ٱلْمُؤْمِنِينَ وَٱلْمُؤْمِنَٰتِ جَنَّٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّـَٔاتِهِمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عِندَ ٱللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٥﴾

''ताकि मोमिन मर्दो और मोमिन औरतो को ऐसे बागो मे दाखिल करे जिन के नीचे नहरे बह रही है जिन मे वो हमेशा रहेगें और उन से उन की बुराईयां दूर कर दे और अल्लाह के नज़दीक ये बड़ी कामयाबी है ।'' (सुरह फतेह 48:5)

सुरह तौबा मे अल्लाह तआला का इर्शाद है :-

وَعَدَ ٱللَّهُ ٱلْمُؤْمِنِينَ وَٱلْمُؤْمِنَٰتِ جَنَّٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا وَمَسَٰكِنَ طَيِّبَةً فِى جَنَّٰتِ عَدْنٍ ۚ وَرِضْوَٰنٌ مِّنَ ٱللَّهِ أَكْبَرُ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ ٱلْفَوْزُ ٱلْعَظِيمُ ﴿٧٢﴾

''और अल्लाह ने मोमिन मर्दो और मोमिन औरतो से ऐसे बगाअत का वादा किया है जिन मे नहरे जारी है उन मे वो हमेशा रहेगे नीज सदाबहार बगाअत मे, पाकीज़ा कयाम गाहो मे भी और अल्लाह की खुशनुदगी तो उन सब नेअमतो से बढ़ कर होगी यही बहुत बड़ी कामयाबी है ।'' (सुरह तौबा 9:72)

सुरह निसा मे अल्लाह तआला ने फरमाया :-

وَمَن يَعْمَلْ مِنَ ٱلصَّٰلِحَٰتِ مِن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُو۟لَٰٓئِكَ يَدْخُلُونَ ٱلْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا ﴿١٢٤﴾

''और जो कोई नेक काम करे ख्वाह मर्द हो या औरत बशर्ते वो मोमिन हो पस ऐसे ही लोग जन्नत मे दाखिल होगे और उन पर ज़रा भी जुल्म न किया जायेगा । (सुरह निसा 4:124)

लफ्ज़ मोमिन मुसलमानो के सिफाती नामो मे से है इसी तरह अल्लाह तआला के ज़ाती नाम के अलावा सिफाती नाम 99 या इस से ज्यादा है नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ाती नाम के अलावा सिफाती नाम है । इसी तरह अहले हदीस भी एक सिफाती नाम जो अहद रिसालत से है । अहद रिसालत मे तमाम लोगो का मज़हब सिर्फ कुरआन व सुन्नत की तरफ था लेकिन जब लोग मुख्तलिफ फिर्को मे बंट गये तो वो पुरानी जमाअत जो

''म अना व असहाबी'' (एक जमाअत जिसके लिये अल्लाह के रसुल सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा था 73 मे 72 फिर्के जहन्नमी होगे और एक जमाअत जो जन्नत मे जायेगी जिस पर आज मैं और मेरे सहाबा है) से थी उसने अपना पुराना नाम अहले हदीस बाकी रखा और ये उनका सिफाती नाम है और कयामत तक ''म अना अलैहि व असहाबी'' के तर्ज़ पर अमल करने वाली जमाअत इसी सिफाती नाम यानि अहले हदीस से मुन्सलिक रहेगी जिसकी दलील आगे दी जायेगी ।

अल्लाह तआला कयामत के दिन इस जमाअत को इसी अहले हदीस नाम से पुकारेगा जिस की दलील ये हदीस है :–

''हज़रत अनस रजि0 से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब कयामत का दिन होगा तो अहले हदीस इस हाल मे आयेगे के उन के साथ दो अतिया (कुरआन व सुन्नत) होगी पस अल्लाह उन से कहेगा तुम अहले हदीस हो नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजते थे जन्नत मे दाखिल हो जाओ ।'' (तबरानी, सखावी, तारीख बगदाद 3)

दीगर नामो के दलाईल कुरआन व हदीस की रौशनी मे

अल्लाह का ज़ाती नाम अल्लाह है और इस के बहुत से सिफाती नाम है मसलन रहमान, रहीम, अलीम, कदीर, रज़्ज़ाक, कुद्दुस, रब, वगैरह वगैरह अल्लाह तआला ने फरमाया :–

وَلِلَّهِ ٱلْأَسْمَآءُ ٱلْحُسْنَىٰ فَٱدْعُوهُ بِهَا ۖ وَذَرُوا۟ ٱلَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِىٓ أَسْمَٰٓئِهِۦ ۚ سَيُجْزَوْنَ

مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١٨٠﴾

''अल्लाह के अच्छे अच्छे नाम है उसे उन नामो के साथ पुकारो'' (अल अराफ 7: 180)

और एक दूसरी जगह अल्लाह तआला ने फरमाया :–

قُلِ ٱدْعُوا۟ ٱللَّهَ أَوِ ٱدْعُوا۟ ٱلرَّحْمَـٰنَ ۖ أَيًّا مَّا تَدْعُوا۟ فَلَهُ ٱلْأَسْمَآءُ ٱلْحُسْنَىٰ ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَٱبْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١١٠﴾

''आप कह दे कि अल्लाह को पुकारो या रहमान को पुकारो जिस नाम से भी पुकारो उस के अच्छे नाम है ।'' (बनी इस्त्राईल 17:110)

यानि अल्लाह तआला के उन सिफाती नामो को नाम कहा गया है ।

''अबु हुरैरा रजि0 से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला के निन्यानवे नाम है जो शख्स उन को याद करेगा वह जन्नत मे दाखिल होगा ।'' (मुत्तफकुन अलैह,(बुखारी, मुस्लिम), मिश्कात 2/707)

नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुख्तलिफ नाम

''जुबैर बिन मुतईम रजि0 ने बयान किया कि अल्लाह के रसुल सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया – मेरे पांच नाम है । मै ''मुहम्मद'' और ''माही'' हूं, कि अल्लाह तआला मेरे जरीये कुफ्र को मिटायेगा और मैं ''आकिब'' हूं यानी आखिरी नबी हूं, मेरे बाद कोई नया नबी दुनिया में नहीं आयेगा ।'' (किताबुल फज़ाइल हदीस नं0 3532, सहीह बुखारी)

मुसलमानो के चंद नाम कुरआन मे

إِنَّمَا ٱلْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا۟ بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٠﴾

''बेशक मोमिन आपस मे भाई है ।'' (सुरह हुजरात 49:10)

قَدْ أَفْلَحَ ٱلْمُؤْمِنُونَ ﴿١﴾

''बेशक मोमिनो ने कामयाबी हासिल कर ली'' (सुरह मोमिनून 23:1)

أَلَآ إِنَّ حِزْبَ ٱللَّهِ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿٢٢﴾

''जान लो कि अल्लाह का जत्था ही कामयाब होगा ।'' (सुरह मुजादला 58:22)

وَٱلسَّـٰبِقُونَ ٱلْأَوَّلُونَ مِنَ ٱلْمُهَـٰجِرِينَ وَٱلْأَنصَارِ وَٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوهُم بِإِحْسَـٰنٍ رَّضِىَ ٱللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا۟ عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّـٰتٍ تَجْرِى تَحْتَهَا ٱلْأَنْهَـٰرُ خَـٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ ٱلْفَوْزُ ٱلْعَظِيمُ ﴿١٠٠﴾

''और मुहाजरीन और अंसार साबिक और मुकद्दम है और जितने लोग इख्लास के साथ उन के पैरू है अल्लाह उन सब से राजी हुआ और वह सब अल्लाह से राज़ी हुए ।'' (सुरह तौबा 9:100)

لَّقَد تَّابَ ٱللَّهُ عَلَى ٱلنَّبِيِّ وَٱلۡمُهَٰجِرِينَ وَٱلۡأَنصَارِ ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ ٱلۡعُسۡرَةِ مِنۢ بَعۡدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٖ مِّنۡهُمۡ ثُمَّ تَابَ عَلَيۡهِمۡۚ إِنَّهُۥ بِهِمۡ رَءُوفٞ رَّحِيمٞ ﴿١١٧﴾

''अल्लाह तआला ने पैगम्बर के हाल पर तवज्जो फरमाई और मुहाजरीन और अंसार के हाल पर भी जिन्होने ने ऐसी तंगी के वक्त पैगम्बर का साथ दिया ।'' (सुरह तौबा 9:117)

अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने उम्मत की दो जमाअतो को जब कि दोनो जमाअते मुसलमान ही थी दो अलग अलग नामो से जिक्र किया अगर उन नामो से इख्तेलाफ व इन्तेशार को हवा मिलती तो हरगिज़ हरगिज़ अल्लाह तआला उन्हे दो अलग अलग नाम नहीं देता । इस के लिये दीगर बहुत नाम भी कुरआन मजीद से साबित है मसलन अलफुकरा, अलसालेहीन, अल शोहदा, अल सिद्दीकीन, वगैरह ।

अल्लाह तआला ने सिर्फ इसी उम्मत के मुस्लिम का ही दूसरा नाम नहीं रखा बल्कि इस से पहले की उम्मत का भी मुस्लिम के अलावा दुसरा नाम रखा है ।

दलील – अल्लाह तआला का इर्शाद है :–

وَإِذۡ أَوۡحَيۡتُ إِلَى ٱلۡحَوَارِيِّـۧنَ أَنۡ ءَامِنُواْ بِي وَبِرَسُولِي قَالُوٓاْ ءَامَنَّا وَٱشۡهَدۡ بِأَنَّنَا مُسۡلِمُونَ ﴿١١١﴾

''और जब कि मै ने हवारिन को हुक्म दिया कि तुम मुझ पर और मेरे रसुल पर ईमान लाओ उन्होने ने कहा हम ईमान लाये आप पर शाहिद रहिये कि हम मुसलमान है ।''(सुरह माईदा 5:111)

इस आयत मे अल्लाह तआला ने अहले किताब को मुस्लिम के नाम से नवाजा है लेकिन उन मुसलमानो को फिर कुरआन मजीद मे इन अल्फाज़ मे खिताब किया गया अल्लाह तआला का इर्शाद है

وَلْيَحْكُمْ أَهْلُ ٱلْإِنجِيلِ بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فِيهِ ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فَأُو۟لَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَـٰسِقُونَ ﴿٤٧﴾

''और इंजील वालो को भी चाहिये कि अल्लाह तआला ने जो कुछ इंजील मे नाज़िल किया है इसी के मुताबिक हुक्म करे और जो अल्लाह तआला के नाजिल करदा से ही हुक्म न करे वो फासिक है।'' (सुरह माईदा 5:47)

इस आयते करीमा से ये बात वाजेह हो जाती है है कि मुसलमान अपनी किताब की तरफ भी मंसूख हो सकते है जैसे अल्लाह तआला ने ईसाईयो को मुसलमान होने के बावजूद उन्हे अहले इंजील से खिताब फरमाया उन की किताब का नाम इंजील था – हमारी किताब का नाम खुद किताब ही मे हदीस रखा गया है । मुख्तसर ये कि अहले हदीस कहलाना मुस्लिम होने के खिलाफ नहीं हम मुस्लिम भी है और अहले हदीस भी जिस तरह ईसाई मुस्लिम भी है और अहले इंजील भी ।

मुसलमानो के दुसरे नाम अहदीस मे

सहीह अहदीस मे भी कई नामो का जिक्र मिलता है ।

(1) ''पस तुम मुसलेमीन को उनके नामो के साथ पुकारो जो नाम अल्लाह अज्ज व जल ने उनके नाम रखे है यानि मुसलमान, मोमिन और अब्दुल्लाह ।'' (मुसनद अहद 4/130)

(2) ''ऐ कुरआन वालो वित्र पढ़ा करो क्योकि अल्लाह भी वित्र है, दोस्त रखता है वित्र को।''(सहीह मुस्लिम, सुनन अबू दाऊद 1413)

(3) ''गिलान बिन जरीर ने बयान किया मै ने हज़रत अनस बिन मलिक रजि0 से पूछा बताईये अंसार अपना नाम आप लोगे ने खुद रखा लिया था या आप लोगो का ये नाम अल्लाह तआला ने रखा उन्होने कहां नही बल्कि हमारा ये नाम अल्लाह तआला ने रखा है ।'' (सहीह बुखारी)

लफ्ज अंसार नासिर की जमाअ है जिस के मायना मददगार के है मदीना के कबीले औस और खजरज जब मुसलमान हुए और नुसरत ईस्लाम के लिये आहजरत सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से अहद किया तो अल्लाह पाक ने अपने रसुल पाक सल्लाल्लहु अलैहि वसल्लम की जबान पर लफ्ज अंसार से उन को इज्जत बख्शी । हाफिज इब्ने हजर फरमाते है अंसार इस्लामी नाम है रसुले करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औस और खजरज और उन के दोस्त कबीलो का ये नाम रखा जैसा कि हदीस अनस रजि0 मे जिक्र है । इसी तरह और भी कई नामो का जिक्र मिलता है ।

उम्महातुल मोमिनीन व अमीरूल मोमिनीन का लकब

कुरआन व हदीस का मुताला करने वाले जानते है कि मोमिन नाम की तकरार बहुत ज्यादा है अज़वाज मुतहरात (पाक बीवियां) व खुलफा व उमरा की निसबत इसी तरफ की गई है अल्लाह तआला का इर्शाद है :-

ٱلنَّبِىُّ أَوْلَىٰ بِٱلْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ ۖ وَأَزْوَٰجُهُۥٓ أُمَّهَٰتُهُمْ ۗ ﴿٦﴾

''नबी मोमिन के साथ खुद उनकी नफ्स से भी ज्यादा ताल्लुक रखते है और आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियां मोमिनीन की मांए है । ''(सुरह अहज़ाब 33:6)

अल्लाह तआला ने आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों को उम्महातुल मोमिनीन का नाम दिया है । किसी सहाबी रसुल सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से या ताबई से या मुहद्दीस से ये बात साबित नहीं कि उन्होने ने नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों को उम्महातुल मोमिनीन के बजाए उम्महातुल मुस्लेमीन कहा हो । कुरआन व हदीस मे मुस्लिम नाम से ज्यादा मोमिन को अहमियत दी गई है ।

अमीरूल मोमिनीन

उम्महातुल मोमिनीन की तरह अमीरूल मोमिनीन का नाम भी सहाबा किराम मे जाना पहचाना था और सहाबा किराम रजि0 और उन के बाद के लोग खुलफाए राशेदीन और बाद के खुलफा को अमीरूल मोमिनीन के नाम से याद किया करते थे आज का एक मामूली मुस्लिम भी इस से वाकिफ है क्योकि उम्मुल मोमिनीन की तरह अमीरूल मोमिनीन का नाम भी मशहूर है । इस नाम की इब्तेदा कैसे हुई ये एक दिलचस्प वाकिया है । अल्लामा हैसमी नकल करते है कि उमर बिन अब्दुल अजीज़ ने अबूबक्र बिन सुलेमान से कहा वो सब से पहले खलीफा कौन है जिन्हे अमीरूल मोमिनीन लिखा गया ? अबूबक्र बिन सुलेमान ने कहा मुझे अशफा बिन अब्दुल्लाह ने खबर दी जो कि मुहाजिरीन अव्वल मे से है कि लबीद बिन राबिया और अदी बिन हातिम रजि0 मदीना आए फिर दोनो मस्जिद आए और उन्होने ने वहां उमरो बिन अल आस रजि0 को पाया पस उन्होने ने कहा ऐ इब्ने आस रजि0 आप हमारे लिये अमीरूल मोमिनीन से इजाजत हासिल करे (क्योकि हम उनसे मिलना चाहते है) अम्र बिन आस रजि0 ने कहा अल्लाह कि कसम तुम ने उनके (उमर बिन खत्ताब रजि0) नाम के बारे मे दुरूस्त बात कही है क्योकि वो अमीर है और हम मोमिनीन है फिर अम्र बिन आस रजि0 उमर रजि0 के पास आए और अस्सलाम अलैकुम कहा आप अमीर है और हम मोमिनीन चुनांचे इसी दिन से अमीरूल मोमिनीन लिखना जारी हो गया ।(किताब अल फिरका जदीद हवाला रवाहा तबरानी 61/9)

किसी एक सहाबी या मुहद्दिस से ये बात साबित नहीं कि उन्होने अमीरूल मोमिनीन के बजाए अमीरूल मुसलेमीन के अल्फाज़ इस्तेमाल किये हो ।

अहले हदीस नाम पर लान तआन

जबसे अहले हदीस की दावत जो सिर्फ कुरआन व सुन्नत की दावत है इसमे ना कुफा के तरफ, ना बगदाद की तरफ, ना लाहौर की तरफ, ना सहारनपुर की तरफ, ना बरेली की तरफ, ना देवबंद की तरफ, और न किसी उम्मती की तरफ बुलाया जाता है, बल्कि सिर्फ दावत दी जाती या तो रब के कुरआन की या मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान की । मगर देखा जाता है कि अपने आपको तौहीद परस्त कहने वाले भी किसी ना किसी उम्मती या किसी ना किसी शहर की तरफ अपने आपको मंसूब करे हुए है और अपने मसलक के खिलाफ एक अल्फाज़ भी सुनने को तैयार नहीं भले ही उनका मसलक कुरआन व सुन्नत के खिलाफ क्यो न दावत दे, फिर भी उससे चिमटे रहेगे । इसी तरह जबसे अहले हदीस की दावत शुरू हुई बड़े बड़े नाम नमुद तौहीद परस्तो ने इस पर लान तआन किया जैसे ये अंग्रजो के ज़माने की पैदावार है (उल्टा चोर कोतवाल को डांटे, किसी की की बुनियाद 1865 की तो किसी की 1940 की,यानि कोई भी जमात 150 साल से पहले की नहीं है), अहले हदीस बुखारी की तकलीद करते है, इनको बुखारी का बुखार है, बुखारी भी इंसान थे उनसे भी गलती हुई होगी (मगर सहीह बुखारी से एक जईफ हदीस ला नही सकते), तो क्या अगर हदीसो को जमा करने वाले इंसान थे तो फिर बताया जाये कि कुरआन को जमा करने वाले कौन थे ? हदीसे तो मुहद्दीसो की कसीर तादाद ने जमा की, (और पुरी दुनिया मे जितने मजाहिब है उनमे से सिर्फ इस्लाम को ये शर्फ हासिल है कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस जमा करते करते इस उम्मत के 10 लाख अफराद के जिन्दगी के हालत भी जमा हो गये यानि वे 10 लाख लोग जिन्होने हदीसे रिवायत की है, वो कहां कहां रहे, कैसा खाते थे, कैसे पीते थे, कैसा अख्लाक था, वगैरह वगैरह) मगर कुरआन तो हज़रत जैद बिन साबित रजि0 ने जमा किया, क्या वो इंसान नहीं

थे, क्या वो नहीं सोचते की उनकी लान तआन से कुरआन भी महफूज़ नहीं रहेगा । अल्लाह तआला फरमाता है :-

إِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا ٱلذِّكۡرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ٩

''हमने ही इस जिक्र को नाजिल किया और हम ही इसकी हिफाज़त करने वाले है ।'' (सुरह हिज्र 15:9)

जिक्र से मुराद कुरआन व हदीस ही है । मगर वो जानते नहीं अल्लाह हिदायत करे ।

अहले हदीस कोई नई जमाअत नहीं है तमाम अहले इल्म इस बात को अच्छी तरह जानते है कि उन का नसबुल ऐन किताब व सुन्नत है और जब से किताब व सुन्नत है उस वक्त से ये जमाअत है इस लिये उनकी दावत किताब व सुन्नत की तरफ है किसी गांव या शहर की तरफ नहीं । अल्लाह तआला ने कई मकामात पर कुरआन को हदीस कहा है :-

تِلۡكَ ءَايَٰتُ ٱللَّهِ نَتۡلُوهَا عَلَيۡكَ بِٱلۡحَقِّۖ فَبِأَيِّ حَدِيثِۭ بَعۡدَ ٱللَّهِ وَءَايَٰتِهِۦ يُؤۡمِنُونَ

''अल्लाह तआला और उसकी आयतो (हदीस) के बाद किस पर ईमान लाओगे ।''(सुरह जासिया 45:6)

दुसरी जगह इर्शाद फरमाया :-

فَبِأَيِّ حَدِيثِۭ بَعۡدَهُۥ يُؤۡمِنُونَ ٥٠

''अब इस कुरआन (हदीस) के बाद किस बात पर ईमान लाओगे ।'' (सुरह मुरसलात 77:50)

एक जगह :-

فَلَعَلَّكَ بَٰخِعٌ نَّفۡسَكَ عَلَىٰٓ ءَاثَٰرِهِمۡ إِن لَّمۡ يُؤۡمِنُواْ بِهَٰذَا ٱلۡحَدِيثِ أَسَفًا ۝٦

''पस अगर ये लोग इस हदीस (कुरआन) पर ईमान न लाये तो क्या आप उन के पीछे इसी गम मे अपनी जान हलाक कर डालेगे ।''(सुरह कहफ 18:6)

इसके अलावा और दीगर आयते है जिनमे लफ्ज़ हदीस से मुराद कुरआन है और हर खतीब भी अपने खुतबे जुमाअ मे ये पढ़ता है :-

''फ ईन्ना खैरल हदीसे किताबुल्लाह''

यानि ''बेहतरीन हदीस अल्लाह की किताब है ।'' और इसी तरह नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के अकवाल अफआल और तकारीर को हदीस कहा गया है (मुकदमा मिश्कात सफा 3) इन चंद दलाईलो से ये बात ज़ाहिर हो गई कि कुरआन मजीद और नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के अकवाल(फरमान), अफआल(फेअल, कोई अमल करना), और तकरीर(आपके सामने कोई काम किया गया उसके बारे मे आपकी खामोशी या हुक्म) हदीस है लेहाज़ा इस एतबार से अहले हदीस के मानी होगे ''सहाबे कुरआन व हदीस'' यानि ''कुरआन और नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहकाम पर अमल करने वाला''

असहाबुल हदीस, अहले हदीस, अहले सुन्नत, अहल या असहाब के मानी मानने वाले है, अब इस की निस्बत हदीस की तरफ कर दे तो मानी होगे हदीस वाले और कुरआन को भी अल्लाह ने हदीस कहा है जैसा कि ऊपर गुजर चुका है । अब ये बात अच्छी तरह वाजेह होगी कि इस्लाम से मुराद कुरआन व हदीस है और कुरआन व हदीस से मुराद इस्लाम है और मसलक अहले हदीस की बुनियाद इन्ही दोनो चीज़ो पर है और यही जमाअत हक्का है और रसुले करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस हदीस का मतलब ला तजालू

तईफा मन उम्मती –

''मेरी उम्मत मे से एक जमाअत हमेशा हक पर कायम रहेगी उन का मुखालिफ उन को नुकसान न पहुंचा सकेगा यहां तक की अल्लाह का हुक्म (कयामत) आ पहुंचेगा ।`` (मुस्लिम, इब्ने माजा)

मुहद्दीसिन और मुफ्फसेरीन ने इस हदीस से यही मुराद ली है कि वह गिरोह अहले हदीस है ।

हज़रत इमाम बुखारी रह0 फरमाते है कि जिस जमाअत के बारे मे हुजूर सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि वह सदा हक पर रहेगी इससे मुराद जमाअत अहले हदीस है ।

हज़रत इमाम बुखारी रह0 के उस्ताद अली बिन मदीनी रह0 फरमाते है कि वह मुज़फ्फर मंसूर हमेशा हक पर रहने वाली जमाअत अहले हदीस है ।(शर्फ असहाबुल हदीस)

रसुले करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :–

''सदियो मे बेहतरीन सदी मेरी है फिर वो लोग जो उन के बाद होगे, फिर वो लोग जो उन के बाद होगे ।''(मुत्तफकुन अलैहि)

इससे मुराद सहाबा, ताबई, ताबे ताबई का दौर है, 222 हिजरी तक का ज़माना खैरूल कुरून समझा जाता है उन लोगो ने खुद अपने लिये अहले हदीस का लकब इस्तेमाल किया और इसी तरह मुहद्देसीन किराम मुफ्फसरीन किराम अय्यमा अरबा, और ने अहले हदीस लकब इस्तेमाल किया है । आईये अब आपके सामने लकब अहले हदीस के वो दलाईल पेश किये जा रहे है जो सहाबा रजि0 के दौर से मौजूदा दौर तक है ताकि दूध का दूध और पानी का पानी हो जाये ।

लकब अहले हदीस सहाबा किराम के दौर मे

(1) हज़रत अबु सईद खुदरी रजि0 जब हदीस के जवान तुलबा (विद्यार्थी) को देखते तो फरमाते तुम्हे मरहबा रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तुम्हारे बाबत हमे वसीयत फरमाई है, हमे हुक्म दिया है कि हम तुम्हारे लिये अपनी मजलिसो मे कुशादगी करे और तुम को हदीस समझाये क्योकि तुम हमारे ताबई जांनशी और अहले हदीस हो ।'' (शर्फ असहाबुल हदीस) इससे साबित हुआ कि सहाबा किराम खुद को भी और अपने ताबईन को भी अहले हदीस कहते थे ।

(2) हज़रत अनस रजि0 से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब कयामत का दिन होगा तो अहले हदीस इस हाल मे आयेगे कि उन के साथ दोअतिये (कुरआन व सुन्नत) होगी पस अल्लाह उन से कहेगा तुम अहले हदीस हो नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजते थे जन्नत मे दाखिल हो जाओ । (तबरानी, सखावी, तारीख बगदाद 3)

(3) कसीर रिवायत करने वाले सहाबी हज़रत अबु हुरैरा रजि0 (जो हनफी उलेमाओ के नजदीक गैर फकीह कहलाते है, यानि जिन्हे दीन की समझबुझ नहीं थी, नाऊजुबिल्लाह, सुम्मा नाऊजुबिल्लाह) जिनका विसाल 57 या 58 हिजरी मे हुआ, के मुत्तालिक इमाम अबूबक्र बिन दाऊद रह0 फरमाते है कि मैने आपको ख्वाब मे ये फरमाते हुए देखा –''दुनिया का सब से पहला हदीस वाला अहले हदीस मै था ।'' (तजकिरातुल हुफ्फाज़ 1,29)

(4) कुरआन के सबसे बड़े मुफ्फसीर हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास रजि0 जिनका विसाल 68 हिजरी मे हुआ, अहले हदीस थे । (तारीख बगदाद 3,227)

लकब अहले हदीस ताबईन के दौर मे

(1) मशहूर ताबई हजरत आमिर बिन शरजील शैबी रह0 विसाल 104 हिजरी अहले हदीस थे ।

(2) शेख अली लाहौरी ने अपनी मशहूर किताब ''कशफुल महजूब'' मे फरमाया है अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 इमाम अहलेहदीस थे, यानि अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 अहले हदीस के इमाम थे ।

(3) अल्लामा जैहबी और इमाम खतीब ने जिक्र किया है कि इमाम ज़हरी खलीफा अब्दुल मालिक बिन अबु सुलेमान, उबैदुल्लाह बिन अम्र, यह्या बिन सईद अंसारी, ताबईन मे अहले हदीस के इमाम थे ।(तजकिरातुल हुफ्फाज़ 97, तारीख बगदाद 2,245)

(4) अबूबक्र बिन अयाश ताबई रह0 कहा करते थे कि अहले हदीस हर ज़माना मे दुसरे अहले मज़हब की तरह बराबर मौजूद रहे है ।(मीजान शअरानी)

(5) सहीह मुस्लिम के मुकदमे मे अय्यमा अहले हदीस का जिक्र किया गया है मालिक बिन अनस रह, शैबा बिन हज्जाज रह0, सुफियान बिन उयैना, यह्या बिन सईद, कत्तान, और अब्दुर्रहमान बिन मेहदी वगैरह । (मुकदमा सहीह मुस्लिम)

(6) इमाम इब्ने कुतैबा ने अपनी किताब जो मारूफ अस्मा अय्यमा अहले हदीस से मशहूर है इस मे उन लोगो के नाम गिनाये है जो नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने से आप के ज़माने तक गुज़र चुके है और सौ नाम गिनाये है और इमाम इब्ने कुतैबा तीसरी सदी हिजरी के मशहूर इमाम है जैसा कि अल्लामा जैहबी रह0 ने जिक्र किया है और उन की हालते जिन्दगी मे लिखा है मेरा ख्याल है कि उन की वफात 310 हिजरी मे हुई है ।(तजकिरातुल हुफ्फाज़)

लकब अहले हदीस ताबे ताबईन के दौर मे

(1) ताबे ताबईन अपने आप को अहले हदीस के नाम से इज्ज़त देते थे और इस नाम से खुश होते थे जैसा कि सुफियान सुरी रह0 ने कहा कि अहले हदीस मेरे पास न आये तो मै उन के पास उन के घरो मे जाऊगां ।(शर्फ अहले हदीस)

(2) ताबे ताबईन हज़रत सुफियान बिन उयैना रह0 को उन के उस्ताद इमाम अबू हनीफा रह0 ने अहले हदीस बनाया था, जैसा कि आप अपने लफ्जो मे यूं बयान करते है पहले इमाम अबू हनीफा रह0 ही ने मुझ को अहले हदीस बनाया था । (हदाईकुल हनफिया 134, तारीख बगदाद 9,178)

(3) अल्लामा शहर सतानी रह0 ने अपनी किताब अल मलल व अल खल मे अय्यमा अहले हदीस के नाम गिनाये है और वो अहले हिजाज और वो मालिक बिन अनस रह0 और मुहम्मद बिन इदरीस शाफई रह0 के असहाब मे और सुफियान सुरी के असहाब मे और दाऊद बिन अली बिन मुहम्मद के असहाब मे और इसी तरह अल्लामा इब्ने खलदुन ने अपनी किताब तारीख इब्ने खलदुन मे जिक्र किया है ।(तारीख इब्ने खलदुन 1,372)

(4) अल्लामा अबू मंसूर अब्दुल कदीर बिन ताहिर तैयमी बगदादी ने अपनी मशहूर किताब उसूले दीन मे सहाबा, ताबईन, ताबे ताबईन, के हालत का जिक्र किया है, दौराने जिक्र मे कहा कि रोम ज़जीरा शाम और आज़र बेजान की सरहदो के पूरे बाशिन्दे अहले हदीस के मज़हब पर थे और इसी तरह अफ्रिका और उन्दुलुस के बाशिन्दे बहरे मगरिब के पूरे बाशिन्दे, यमन की सरहद के पूरे बाशिन्दे अहले हदीस थे । (उसूले दीन 1,310)

(5) इमाम हफ्स बिन ग्यास रह0 वफात 194 हिजरी फरमाते है अहले हदीस हम खेर अहले दुनिया पूरी दुनिया मे बेहतरीन जमाअत अहले हदीस है ।

(6) इमाम सुफियान सूरी रह0 वफात 162 हिजरी फरमाते है फरिश्ते आसमानो के पहरेदार है और अहले हदीस जमीन के पहरेदार है। यानि यही दीन की दावत देने वाले और तकरीर व तहरीर से इस की हिफाज़त करने वाले है। नीज़ फरमाते है उन के लिये यही नेकी काफी है कि वह जब हदीस मे आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम आता है तो दुरूद शरीफ लिखते और पढ़ते है।

(7) खलीफा हारून रशीद वफात 193 हिजरी कहते है चार सिफते मुझे चार जमाअतो मे मिली – कुफ्र जहमिया मे, बहस व झगड़ा मोतजिला मे, झूठ राफजियो मे, और हक अहले हदीसो मे।

(8) अब्दुल्लाह बिन दाऊद रह0 वफात 213 हिजरी फरमाते है कि मैने अपने उस्ताद से सुना कि अहले हदीस अल्लाह तआला की तरफ से उस के दीन के अमीन है यानि इल्म व अमल मे रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन की हिफाज़त करने वाले है।

ये अकवाल शर्फ असहाबुल हदीस से लिये गये है। इस तफसील से मालूम हुआ कि सहाबा, ताबईन, ताबे ताबईन ये खैरूल कुरून (खैर के तीन ज़माने) अहले हदीस के नाम से मशहूर थे और उन को अहले हदीस कहा जाता था।

लकब अहले हदीस चारो इमामो की नज़र मे

अय्यमा अरबा (चारो इमाम) खुद भी अहले हदीस थे और बड़ी ही शिद्दत के साथ लोगो को अपनी तकलीद से मना करते हुए सिर्फ कुरआन व हदीस की दावत देते थे।

(1) इमाम अबू हनीफा रह0 वफात 150 हिजरी आपके शागिर्द सुफियान बिन उयैना रह0 फरमाते है –''कि पहले पहले इमाम अबू हनीफा रह0 ने मुझ को अहले हदीस बनाया था।(हदाईकुल हनफिया सफा 134)

हनफिया के बानी मशहूर इमाम मुहम्मद रह0 के कौल के मुताबिक उन्होने ने अपनी किताब मुवत्ता इमाम मुहम्मद मे ज़हरी के बारे मे कहा कि इब्ने शहाब (ज़हरी रह0) मदीना मे अहले हदीस के नजदीक सब से बड़े आलिम थे ।

(2) इमाम शाफई रह0 वफात 204 हिजरी (एक हनफी ने इनके सर पर लोहे की सलाख का वार किया जिसके जख्म से इनकी वफात 54 साल की उम्र मे ही हो गई, फिरका परस्ती का इबरतनाक अंजाम अल्लाह रहम करे) शेखुल इस्लाम इब्ने तैमिया वफात 728 हिजरी आप के यानि इमाम शाफई रह0 के बारे मे फरमाते है कि आपने अहले हदीस का मज़हब पकड़ा और इसी को अपने लिये पसन्द फरमाया ।

(3) अल्लामा इब्ने कय्युम वफात 751 हिजरी ने इमाम शाफई रह0 का कौल नकल किया है यानि इमाम शाफई रह0 ने फरमाया –''कि तुम अपने ऊपर हदीस वालो (अहले हदीस) को लाजिम पकड़ो क्योकि वो दूसरो के एतबार से ज्यादा दुरूस्त और सहीह है

(4) इमाम शाफई रह0 से रिवायत है आप फरमाते थे कि अहले हदीस हर ज़माने मे वैसे ही है जिस तरह सहाबा रजि0 अपने ज़माने मे थे । यानि वो सख्ती के साथ किताब व सुन्नत की पैरवी करते थे ।

(5) इमाम मालिक रह0 वफात 180 हिजरी आप के मुत्तालिक अल्लामा शम्सुद्दीन अबू अब्दुल्लाह जैहबी वफात 748 हि0 लिखते है कि ''इमाम मालिक रह0 अहले हदीस के इमाम थे ।

(6) सहीह मुस्लिम के मुकदमे सफा 23 मे इमाम मुस्लिम बिन हिजाज निशापुरी रह0 वफात 261 हि0 ने इमाम मालिक रह0 को इमाम अहले हदीस कहा है ।

(7) इमाम अहमद बिन हंबल रह0 वफात 241 हिजरी के बारे इमाम तैमिया फरमाते है ''कि आप अहले हदीस के मज़हब पर थे ।''

(8) इमाम अहमद बिन हंबल रह0 ताईफा मंसूरा वाली हदीस की तशरीह फरमाते है ''यानि अगर ताईफा मंसूरा वाली जमाअत से मुराद अहले हदीस नही है तो फिर मुझे मालूम नहीं कि ये कौन है ।''

(9) हाफिज़ इब्ने कसीर रह0 ने अल्लाह तआला का ये कौल ''जिस दिन हम तमाम उम्मतो को उनके इमामो के साथ बुलायेगें (सुरह बनी इस्रराईल 17:71)'' नकल करके फरमाते है कि सल्फ सालेहीन इस आयत करीमा के पेशे नज़र ये कहते है कि हज़रात अहले हदीस के लिये इस से बड़ा शर्फ और क्या हो सकता है कि उन्हे उनके अपने इमाम व रहबर नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बुलाया जायेगा ।(तफसीर इब्ने कसीर सफा 200)

(10) शेख अब्दुल कादीर जिलानी रह0 की शहादत – आपने फरमाया ''अहले बिदअत की कुछ अलामते है जिन से उन के पहचान हो जाती है एक अलामत तो ये है कि वो अहले हदीस को बुरा कहते है ।''(गुनयातुत्तालेबीन 80)

(11) अल्लामा शेख नासिरूद्दीन अलबानी रह0 फरमाते है ''अलहम्दुलिल्लाह मै सलफी और अहले हदीस हूं और ये यकीन है कि जिस शख्स का मनहज सलफियत नही वो हक से हटा हुआ है ।''

अहले हदीस ही मुस्लिम है

अल्लाह के मेहबूब रसुल मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से पुछा गया कि मुस्लिम कौन है – आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''जिनमे 3 अलामते पाई जाये वो मुस्लिम है –

(1) हमारे किबले की तरफ रूख करे ।

(2) हमारी तरह नमाज़ पढ़ने का एहतेमाम करे ।

(3) हमारा जबीहा खाये ।

(रवाहा मुस्लिम, रवाहा बुखारी)

इस हदीस से ज़ाहिर है कि –

(1) सिर्फ अहले हदीस की किबले की तरफ रूख करते है किसी दुसरी जगह मसलन इराक, बगदाद, सहारनपुर, देवबंद, लाहौर, बरेली, वगैरह वगैरह की तरफ दावत नहीं देते ।

(2) सिर्फ अहले हदीस ही आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरह नमाज़ पढ़ने का एहतेमाम करते है और इसी की दावत देते है, और नमाज़ के अरकान मे से किसी भी अरकान जो साबित हो पर लान तआन नही करते । या किसी उम्मती के इज्तेहाद पर हदीस को नहीं छोड़ते ।

(3) सिर्फ अहले हदीस ही अल्लाह और रसुल की हलाल कर्दा चीज को हलाल समझते है ऐसा नहीं कि बिज्जु, गोह, घोड़ा, मुर्दा मछली जो पानी पर तैरे मेढ़क को हराम समझे (हनफी मे हराम, शाफई, मालिकी, हंबली मे हलाल) जैसे की दुसरे लोगो ने उम्मती के इज्तेहाद से अल्लाह के हलाल को हराम करार दे चुके है । जिनके बारे मे अल्लाह रब्बुल इज्ज़त फरमाता है ''उन लोगो ने अल्लाह को छोड़कर अपने आलिमो को अपना रब बना लिया '' (सुरह तौबा 9:31)

मुस्लिम, मोमिन और अहले हदीस की वजाहत कर दी गई । अल्लाह हम सब को हक को समझने उस पर चलने और उसकी दावत देने की तौफीक अता फरमाये । आमीन या रब्बुल आलमीन ।

व आखरूद दवानि वलहम्दुलिल्लाहे रब्बुल आलमीन ।

इस्लामिक दावाअ सेन्टर,

रायपुर छत्तीसगढ़